www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अध्यात्म विज्ञान सम्मत बने एवं विज्ञान अध्यात्म परक

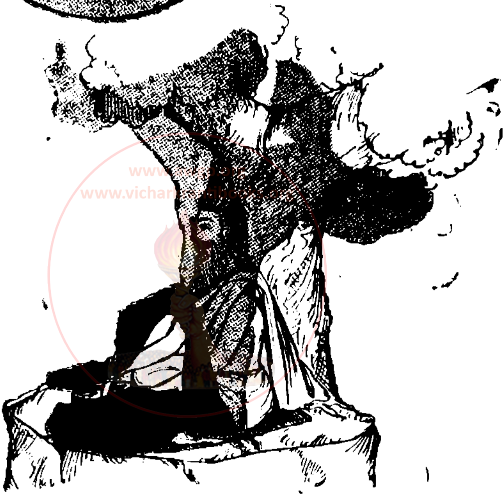

- श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अध्यात्म विज्ञान सम्मत बने एवं विज्ञान अध्यात्मपरक

—★—

पिछले दिनों बुद्धिवाद एवं विज्ञान का जो विकास हुआ है, उसने भौतिक सुविधाओं को भले ही बढ़ाया हो, आध्यात्मिक आस्था को दुर्बल बनाया है। विज्ञान ने जब मनुष्य को एक पेड़ पौधा मात्र बनाकर रख दिया और उसके भीतर किसी आत्मा को मानने से इनकार कर दिया, ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकृत किया इस सृष्टि को सब कुछ अणुओं की स्वाभाविक गतिविधि के आधार पर स्वसंचालित बताया, तो स्वभावतः विज्ञानको प्रत्यक्ष प्रमाणों के आधार पर अति प्रामाणिक मानने वाली बुद्धिवादी नई पीढ़ी उसी मान्यता को शिरोधार्य क्यों न करेगी ? प्रत्यक्ष है कि विचारशील वर्ग अनास्थावान होता चला जा रहा है और यह एक भयानक परिस्थिति है क्योंकि बुद्धिजीवी वर्ग के पीछे जनता के अन्य वर्गों को चलने के लियेविवश होना पड़ता है। आज के थोड़े-से अनास्थावान् बुद्धिजीवी कल परसोंअपनी मान्यताओं से समस्त जन-समाज को आच्छादित किये हुए होंगे।

आध्यात्मिक मन्यताएं सदाचार, सहयोग, सद्भाव, सेवा सद्भावना, पुण्य, संयम एवं त्याग, बलिदान जैसी सत्प्रवृत्तियों की रीढ़ है। आत्म-कल्याण ईश्वरीय प्रसन्नता, पुण्य-परमार्थ स्वर्ग नरक, कर्मफल आदि मान्यताओं के आधार पर ही मनुष्य अपनी चिरसंचित पशुता पैशाचिकता पर नियन्त्रण करने और लोक-कल्याण के लिए नितान्त आवश्यक सत्प्रवृत्तियों को चरितार्थ करने में समर्थ होता है। यदि वह आधार ही नष्ट होगया—यदि उन मान्याताओं को कपोल कल्पित मान लिया गया तो फिर न किसी को संयमी बनने की आवश्यकता अनुभव होगी, न सदाचारी होने की। न पुण्य अभीष्ट होगा, न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परमार्थ। न त्याग की बात कोई करेगा, न बलिदान की। फिर मनुष्य 'खाओ पीओ, मौज उड़ाओ' के आदर्श को अपना कर हर अनैतिक काय करने के लिये तैयार हो जायगा। ताकि वह अधिक मौज-मजा उड़ाने का अधिक अवसर प्राप्त कर सके।

कानूनी पकड़ एवं दण्ड से बचने का रास्ता अब अति सरल है। कानून बहुत ही ढीले-पोले हैं। फिर जिन पर कानून पालने के लिए विवश करने की —दण्ड देने-दिलाने की जिम्मेदारी है, वे राज्य कर्मचारी ही कहाँ दूध के धुले हैं? अपराधी से सांठ-गांठ रखने की कला उन्हें भी आ गई है और उस दुर्बलता से हर भ्रष्टाचारी—हर सामाजिक मर्यादाओं का उल्लंघन करने वाला पूरा-पूरा लाभ उठाता है उठा सकता है। केवल कानून के द्वारा अपराध रोक सकने की बात सोचना उपहासास्पद है। मनुष्य केवल अपनी अन्तरात्मा की पुकार—और ईश्वरीय सत्ताके रोक—अनुग्रह का विचार स्मरण रखकर ही कुमार्ग से बचता और सन्मार्ग अपनाता है। यदि आत्मा और ईश्वर कोई है ही नहीं, कर्मफल देने की कोई अज्ञात व्यवस्था है ही नहीं, तो फिर पाप प्रवृत्तियों को अपनाकर शौक-मौज के साधन जुटाने से कोई चूके क्यों? आज यही विचार बुद्धि-जीवी पीढ़ी के मस्तिष्क में घूम रहे हैं। और उसका नैतिक स्तर दिन-दिन दुर्बल होता-चला जा रहा है।

यह विभीषिका इतनी भयानक है कि इसकी भावी सम्भावनाओं का स्मरण करने मात्र से आँखों के सामने अँधेरा छा जाता है। शुतरमुर्ग की तरह बालू में मुँह ढक कर खतरा टल गया ऐसा सोचना मूर्खता है। सब कुछ अपने आप ठीक हो जायगा ऐसी मान्यता वास्तविकता से दूर है। जहाँ धर्म अध्यात्म का प्रकाश नहीं पहुँचा है ऐसे अफ्रीका आदि प्रदेशों के जंगली लोग अभी भी नर मांस खाते और एक से एक बढ़कर घृणित एवं नृशंस रीति रिवाज अपनाये बैठे हैं। अपने आप सब कुछ ठीक होने वाला होता तो सृष्टि के आरम्भ से लेकर अबतक लाखों वर्षों में वे अपने आपको सभ्यता के उच्च स्तर तक ले आने में समर्थ होगये होते। अपने आप कुछ नहीं होता—सब कुछ करने से होता है। ऋषियों ने लाखों वर्ष तक तप, त्याग, मनन-चिन्तन करके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अध्यात्म और धर्म का अति महत्वपूर्ण कलेवर खड़ा किया है। उसे जन-मानस में प्रविष्ट कराने के लिए अगणित साधु ब्राह्मणों ने तिल-तिल करके अपना जीवन जलाया है। अगणित धर्म ग्रन्थ लिखे गये हैं और उन्हें पढ़ने, सुनने, समझने तथा हृदयंगम करने की स्थिति उत्पन्न करने के लिये अगणित मानव वाढ़ी परम्पराओं या रीति-रिवाजों, प्रक्रियाओं, पूजा-पद्धतियों एवं कर्मकाण्डों का प्रचलन किया है। लगातार उस विचार-धारा से सम्पर्क बनाये रखने के लिए उन्होंने धर्म एवं अध्यात्म का विशालकाय ढांचा खड़ा किया है।

यदि ऋषियों द्वारा प्रादुर्भूत धर्म संस्कृति का आविर्भाव न हुआ होता तो अन्य प्रदेशों की उद्धत जंगली जातियों की तरह समस्त जन-समाज पशु प्रवृत्तियां अपनाये होता और उसकी बौद्धिक विशेषता पतनोन्मुख होकर इस संसार में पैशाचिक कुकर्मों की आग जला रही होती। ईश्वर अपने आप सब कुछ कर लगा यह सोचना ठीक नहीं। गत ८० वर्षों में संसार का ८० फीसदी भाग बौद्धिक एवं राजनैतिक स्तर पर साम्यवादी शासन के अन्तर्गत आ गया जिस तीव्रगति से अब वह चक्र घूम रहा है उसे देखते हुए अगले २० वर्ष में शेष २० प्रतिशत भाग भी उसी मान्यता के क्षेत्र में चला जा सकता है।

बुद्धिवाद और विज्ञान के द्वारा प्रतिपादित उन मान्यताओं के सबन्ध में हमें सतर्क होना होगा जो मनुष्य को अनास्थावान एवं अनैतिक बनाती की हैं। विचारों को विचारों से—मान्यताओं को मान्यताओं से—प्रतिपादनों से काटा जाना चाहिए। समय-समय पर यही हुआ भी है। वाममार्गी विचारधारा को बौद्धों ने हटाया और बौद्ध धर्म के शून्यवाद का समाधान जगद्गुरु शङ्कराचार्य के प्रबल प्रयत्नों द्वारा हुआ। लोगों को केवल तलवार बन्दूकों की लड़ाइयां ही स्मरण रहती हैं। असली लड़ाइयां तो विचारों की लड़ाइयां हैं। वे ही जन-समूह के भाग्य का निर्माण करती हैं। प्रजातंत्र सिद्धान्त के जन्मदाता रूसो और सम्यवाद के प्रवर्तक कालमार्क्स की विचार-धाराऐं पिछली शताब्दियों से मानव समाज का भाग्य निर्माण करती रही हैं। पूंजीवाद, समाजवाद, अधिनायकवाद की विचारधाराओं ने भी अपने ढङ्ग से अपनी महत्वपूर्ण सूचनाऐं प्रस्तुत की है। वाह्य संघर्षों की पृष्ठभूमि में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मूलतः यह विचरधाराएं काम करती हैं। देशों और जातियों का उत्थान पतन उनकी आस्थाओं और प्रवृत्तियों के आधार पर ही होता है, होता रहा है, हो सकता है।

उत्कृष्ट आदर्शों के प्रति अनास्था उत्पन्न करने वाली आज की बुद्धिवादी और विज्ञानवादी मान्यता जिस तेजी से अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाती चली जा रही है उसकी भयंकरता की दुर्धर्ष संभावना का मूल्याङ्कन कम नहीं किया जाना चाहिए। उसका प्रतिरोध करने के लिए तत्परता पूर्वक खड़ा होना चाहिए। युग के प्रबुद्ध व्यक्तियों की यह महती जिम्मेदारी है। इसकी न तो उपेक्षा की जानी चाहिए और न अवज्ञा। हमें एक ऐसा विचार-मोर्चा खड़ा करना चाहिए जो भौतिकवादी अनास्था से पूरी तरह लोहा ले सके। यदि यह कार्य सम्पन्न किया जा सका तो समझना चाहिए कि मानव-जाति के मस्तिष्क को धर्म संस्कृति और अध्यात्म को अंधकार के गर्त में गिरने से बचा लिया गया। पर यह मोर्चा खड़ा न किया जा सका, उसे सफलता न मिली तो परिणाम प्रत्यक्ष है। कुछ ही दिन बाद हम जंगली संस्कृति के, नास्तिकता के, पशु प्रवृत्तियों के पूरी तरह शिकार हो जायेंगे और लाखों वर्षों की मानवीय संस्कृति आत्मदाह करके अपना करुण अन्त प्रस्तुत करेगी।

समय रहते चेतने में ही बुद्धिमानी है। बुद्धिमत्ता की भूमिका प्रस्तुत करनी चाहिए। वही शुभारम्भ किया भी जा रहा है। बुद्धि सम्पन्न एवम् विज्ञान सम्पन्न अध्यात्म के प्रतिपादन की चर्चा इसी दृष्टि से की जा रही है। यह कहना सही नहीं कि धर्म, अध्यात्म-ईश्वर आत्मा आदि का प्रतिपादन बुद्धि का नहीं श्रद्धा का विषय है। अन्ध-श्रद्धा नहीं—विवेक सम्पन्न श्रद्धा ही स्थिर और समर्थ हो सकती है। प्राचीन काल के ऋषियों ने भी बुद्धि की शक्ति से ही अध्यात्म का सारा कलेवर खड़ा किया था। प्राचीन काल में श्रद्धा, शास्त्र और आप्त वचन जन मान्यता के आधार थे। अब यदि दिमाग, तर्क और प्रमाण उसके आधार बन गये हैं तो कोई कारण नहीं कि आज की जन मनोभूमि के अनुसार अध्यात्म सिद्धातों का प्रतिपादन और समर्थन न किया जा सके।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कार्य कठिन है। अति विस्तृत और अति श्रम साध्य है। उसके लिए भारी-मनोयोग, अध्यात्म और प्रत्युत्पन्न मति की आवश्यकता है पर इस संसार में अभाव तो किसी वस्तु का नहीं। आखिर कठिन काम भी तो मनुष्यों ने ही किये हैं। यह काम भी ऐसा नहीं है जो न किया जा सके। सही आधार पर किये गये प्रतिपादन जब मनुष्य के अन्तःकरण में बैठजाते हैं तो उनके अनुसार वे आचरण भी करते हैं। गान्धी युग में जब लोगों को 'स्वतन्त्रता प्राप्ति की उपयोगिता और उसके लिए त्याग, बलिदान की आवश्यकता" समझाई गई तो लाखों लागों ने बड़े से बड़े त्याग, बलिदान उसके लिए किये। हजारों ने फाँसी और गोली खाकर अपने जीवन निछावर कर दिये। ठीक आधार पर पक्की तरह जो आदर्श लोगों को सिखा समझा दिया जाता है उसके लिए वे कष्ट सहते हुए भी आगे बढ़ते हैं। प्राचीन काल में धर्म और अध्यात्म की मान्यांताएं जब लोगों के गले उतर गई थीं तो भारतीय समाज का हर सदस्य देवोपम उत्कृष्ट जीवन जीने में अपनी शान और बहादुरी समझता था भले ही उसे उसमें कितना ही बड़ा कष्ट क्यों न सहना पड़ता रहा हो। आगे भी यही रीति-नीति बरती जाती रहेगी। जब भी कोई आदर्श उस युग की मनोभूमि का आधार लेकर सिखाया समझाया जायगा तो वस्तु स्थिति को लोग समझेंगे और उस पर आचरण भी करेंगे। यदि हम अध्यात्म वादी मान्यताओं का आज विज्ञान, तर्क और प्रमाणों के आधार पर प्रतिपादन कर सकते हों तो निस्संदेह जन समाज को उसे स्वीकार करने में कोई आपत्ति न होगी। और यह भी निश्चित है कि जो बात अन्तःकरण की गहराई में स्वीकार की जाती है वह आचरण में भी अवश्य उतरती है।

आज अध्यात्म का प्रतिपादन जिन आदर्शों पर जिस ढङ्ग से किया जाता है वे जन मानस में गहराई तक प्रवेश नहीं करते। कथा, पुराणों, धर्म शास्त्रों किम्वदन्तियों एवं परंपराओं की प्रामाणिकता पर अब लोगों के मन में संदेह उत्पन्न हो गया है। वे उन्हें किन्हीं किन्हीं व्यक्तियों की ऐसी कल्पनायें मानते हैं जिनकी उपयोगिता एवं वास्तविकता प्रमाणित नहीं होती शङ्का शङ्कित और संदिग्ध मन से हम धर्मोपदेश सुन तो लेते हैं पर उसको

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यथार्थता एवं व्यवहारिकता पर विश्वास नहीं करते। यही कारण है कि धर्मोपदेशों का विशालकाय कलेवर, इतने बड़े आडम्बर के साथ विद्यमान रहते हुए भी उसका जन जीवन पर कोई प्रभाव नही पड़ रहा है। धर्म के बाह्य आवरणों को एक-एक पक्षपात के रूप से अपना लेते हैं पर आचरण में उन आदर्शों का प्रवेश तनिक भी नहीं होने देते जो धर्म की आत्मा है। इसका एक ही कारण है कि अध्यात्म को उन आदर्शों पर नहीं समझाया जाता जो आज की जन मनोभूमि के अनुरूप हो। आज हर व्यक्ति तर्क, प्रमाण और विज्ञान को आधार मानता है। इस युग में कोई भी मान्यता केवल इन तीन आधारों पर ही प्रामाणिक एवं ग्राह्य बन सकती है।

इस युग के मनीषियों का पवित्र कर्त्तव्य है कि वे अपने समय की आवश्यकता को समझें और उसको एक व्यवस्थित विचार पद्धति विनिर्मित करने में संलग्न हों। युग निर्माण के महान प्रयोजन की पूर्ति के लिए यह नितान्त आवश्यक है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए जीवन जीने की कला का—व्यवहारिक अध्यात्म का—प्रतिपादन शिक्षण किया भी जा रहा है। 'अखण्ड-ज्योति' पत्रिका इसी प्रयोजन की पूर्ति में संलग्न है और आवश्यक गोला-बारूद—विचार प्रवाह प्रस्तुत करती चली आ रही है। यह प्रयत्न आगे इसी गति से—और भी अधिक तीव्र गतिसे आगे बढ़ें ऐसे प्रयास चल रहे हैं। आज से तीस वर्ष पूर्व यह कहा जाता था कि—'जहां विज्ञान समाप्त होता है वहां से अध्यात्म आरम्भ होता है।' 'विज्ञान और अध्यात्म का क्षेत्र सर्वथा पृथक् एक' दूसरे से सर्वथा असंबद्ध है।' पर अब ऐसी स्थिति नहीं रही। गत बीस वर्षों में विज्ञान ने अतितीव्रगति से प्रगति की है और उसका हर चरण अध्यात्म के समर्थन की ओर बढ़ा है। लगता है कि यह प्रगति क्रम जारी रहा तो अगले पचास वर्षों में अध्यात्म और विज्ञान दोनों इतने समीप आ जायेंगे कि दोनों का एकीकरण एवं समन्वय असम्भव न रहेगा।

सर्व साधारण की जानकारी प्रायः बहुत पिछड़ी हुई बनी रहती है। प्रगति के नवीन चरण उसमें प्रायः अविज्ञात ही बने रहते हैं। डार्विन का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विकासवादी सिद्धान्त अब नयी खोजों के आधार पर उपहासास्पद बनता चला जा रहा है और फ्रायड के कामुकता समर्थक मनोविज्ञान के अब धुर्रे उड़ा दिये गये हैं। नवीन शोधों ने विकास बाद और मनोविज्ञान को अध्यात्म की दिशा में काफी आगे तक बढ़ा दिया है और लगता है उनके बढ़ते जाते कदम अध्यात्म के समर्थन की दिशा में ही बढ़ रहे हैं। अणुविज्ञान के आचार्य आइन्सटाइन की नवीन खोजों ने अणु-सत्ता की पीठ पर एक सचेतन उत्कृष्ट सत्ता के (ईश्वर के) अस्तित्व को स्वीकार किया है। और भी इस दिशा में बहुत कुछ काम हुआ है। पर वह उतने ऊँचे स्तर के क्षेत्र में है कि सर्व साधारण तक उसकी जानकारी मुद्दतों बाद पहुँचेगी और तब तक अनास्था-वादी मान्यताऐं इतनी प्रखर हो जायेंगी कि उन्हें हटाना, मिटाना संभव न रहेगा।

दर्शन और तत्वज्ञान के उद्गम से ही कोई विचार पद्धति एवं आचार प्रक्रिया प्रादुर्भूत होती है। अध्यात्म का दर्शन और तत्वज्ञान प्रतिपादन करने के लिए ही वेद उपनिषद्, दर्शन, ब्राह्मण, आरण्यक आदि का अविर्भाव हुआ। ईश्वर, जीव प्रकृति के विभिन्न भेद उपभेदोंकी चर्चा रही। दर्शन ही विचार और आचरण का मूल आधार है। इसलिए ईश्वर, आत्मा, धर्म, स्वभाव, कर्मफल आदि के दार्शनिक सिद्धान्तों को सही ढङ्ग से प्रतिपादित करना होगा संसार की दिशा मोड़ने वाले दार्शनिकों ने मानवीय आस्थाओं का मूलभूत विश्लेशण अपने ढङ्ग से किया है और यदि वह लोगों को ग्राह्य हुआ तो निस्संदेह जनसमूह की गतिविधि भी उसी दिशा में सोचने, करने और बढ़ने के लिये प्रेरित प्रभावित होगी। अब भी यही किया जाना है। हम अध्यात्म के दार्शनिक सिद्धान्तों का विज्ञान, तर्क और प्रमाणों के आधार पर प्रतिपादन कर सकें तो निस्संदेह जन-मानस को पुनः उसी प्रकार सोचने और करने का तत्पर किया जा सकता है, जिस पर कि भारतीय जनता लाखों वर्षों तक आरूढ़ रहकर समस्त विश्व का प्रकाशपूर्ण मार्ग-दर्शन करती रही है।

क्र० ८३ प्र०-युग निर्माण योजना, मु०-युग निर्माण प्रेस मथुरा, मूल्य ४० पैसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org